14 / 07 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

बाप समान सफलतामूर्त बनने के लिए
सर्व के प्रति शुभ भावना रखना

➢➢ सफलता के सितारे बनाने वाले और सम्पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति कराने वाले परमपिता परमात्मा शिव बाबा की याद मे मग्न

➳ _ ➳ मैं आत्मा मन ही मन गीत गुनगुनाते ईश्वर अपने साथ है तो डरने की क्या बात है... सदा सफलता साथ हमारे जब हाथ मे उसके हाथ है... बुद्धि रुपी विमान से पहुंच जाती हूं पांडव भवन बाबा के कमरे में...

→ जैसे साकार मे ब्रह्मा बाबा सम्मुख बैठे है और उनकी भृकुटि मे शिव बाबा चमक रहे है...

→ आज भी देते है बाबा पालना साकार की... ऐसी अनुभूति कर रही हूं...

→ बापदादा से निकलती अनन्त शक्तिशाली किरणों से स्वयं को शक्तिशाली अनुभव कर रही हूं...

→ बापदादा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है और मुझ आत्मा को वरदानों से भरपूर कर रहे है...

■ बस चमकते बिंदु से आती अनगिनत अविरल प्रेम की धारा मे खो जाती हूं मैं आत्मा प्यार के सागर मे...

■ और रूहानी नशे में कि मैं आत्मा कितनी भाग्यवान हूं वाह वाह के गीत गाती... स्वयं भगवान मुझ आत्मा को सर्व खजानों से सम्पन्न कर रहे है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा वर्से की अधिकारी हूं... समीप आत्मा हूं...

→ मैं आत्मा रायल परिवार व भविष्य राजघराने मे आने वाली हूं... सतयुग दुनिया मे आने वाली हूं...

■ सर्वशक्तिमान की संतान मा. सर्वशक्तिमान हूं...

→ मुझ आत्मा में अब मांगने के, कृपा कर दो, आशीर्वाद दो के संस्कार खत्म हो गये है व बाबा से मिले वरदानों को फलीभूत कर रही हूं

→ मैं आत्मा सफलता का सितारा हूं

➢➢ सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है इस स्वमान की सीट पर सेट रहती हूं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा लौट आती हूं कर्मक्षेत्र में और अपनी चेकिंग करती हूं कि क्या मैं सफलता का सितारा हूं ?

→ क्या मुझ आत्मा के हर संकल्प मे दृढता है कि मुझ आत्मा की सफलता अनेक बार हुई है और अभी भी हुई पडी है ?

→ क्या यह संकल्प स्वप्न मे तो नही आता होनी चाहिए, होगी या नही होगी ?

→ क्या सदा निश्चयबुद्धि रहती हूं कि सफलता हुई ही पडी है ?

■ मै ईश्वरीय संतान हूं ये नशा रहता है और हर संकल्प मे दृढता रहती है कि सफलता हुई के हुई पडी है...

■ मैं आत्मा हर कर्म, बोल, संकल्प बाप की याद मे करती संतुष्ट और हर्षित रहती हूं...

■ मुझ आत्मा को हर्षित देख अन्य आत्मायें भी दुख और उलझन की लहर को बदल हर्षित हो रही हैं...

■ बापदादा से मिली शक्तियों से भरपूर होकर व उन्हे समय पर यूज करके मैं आत्मा सफलता प्राप्त कर रही हूं...

→ मैं आत्मा ज्ञान और योग की चमक लिए नम्बरवन सितारा बनने का पुरुषार्थ कर रही हूं...

➢➢ बाप समान बनने और सफलता मूर्त बनने का आधार है सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना और शुद्ध कामना

➳ _ ➳ सर्व आत्माओं के सम्बंध सम्पर्क मे आते और सेवा में आते मैं आत्मा शुभभावना और शुद्ध कामना रखती हूं चाहे कोई भी परीक्षा का रुप आए चाहे कोई डगमग करने के निमित्त आए...

→ मै आत्मा भाई भाई की दृष्टि रखती हूं...

→ मैं आत्मा आत्मा भाई से ही ही बात कर रही हूं...

→ आत्मिक दृष्टि रखने से ये स्मृति रहती है कि ये भी बाबा का मीठा बच्चा है...

■ हर आत्मा का अपना एक्यूरेट पार्ट है...

■ हर आत्मा का कल्याण हो...

■ हर आत्मा सदा खुश रहे सुखी रहे...

➳ _ ➳ जब स्वयं परमात्मा मुझ आत्मा को अखूट खजानों से सर्व शक्तियों से सर्व गुणो से सम्पन्न कर रहे है तो मुझ आत्मा को भी देना ही देना है...

→ देना ही देना मुझ आत्मा का धर्म है...

→ सक्रीन से भी मीठे बाप समान मीठा बन सबको स्नेह देकर मीठा बनाना है...

→ चाहे कैसी भी आत्मा आये मै आत्मा दिल से सब के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखते सर्व का स्नेह और सहयोग स्वत: प्राप्त कर रही हूं...

■ दिल से दी गई दुआओं मुझ आत्मा के लिए लिफ्ट का काम कर रही है और मैं आत्मा आगे और आगे बढती जा रही हूं...

→ मैं आत्मा बाप समान बनने का पुरुषार्थ कर रही हूं...